डॉ० कविता कुमारी सिंह
हिन्दी - विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

स्नातक, पार्ट द्वितीय —

विषय — छायावाद

छायावाद के स्वरूप को समझने के लिए उस पृष्ठभूमि को समझ लेना आवश्यक है, जिसने उसे जन्म दिया। साहित्य के क्षेत्र में प्रायः एक नियम देखा जाता है कि पूर्ववर्ती युग के अभावों को दूर करने के लिए परवर्ती युग का जन्म होता है। छायावाद के मूल में भी यही नियम काम कर रहा है। इसके पूर्व द्विवेदीयुग में हिन्दी कविता कोरी उपदेश मात्र बन गई थी। उसमें समाज-सुधार की चर्चा व्यापक रूप से की जाती थी और नैतिकता की प्रधानता के कारण कविता में नीरसता आ गई। कवि का हृदय उस नीरसता से ऊब गया और कविता में सरसता

Don't judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. – Robert Louis Stevenson

लाने के लिए वह छटपटा उठा। उसके लिए उसने प्रकृति को माध्यम बनाया। प्रकृति के माध्यम से जब मानव-भावनाओं का चित्रण होने लगा तभी छायावाद का जन्म हुआ और कविता इतिवृत्तात्मकता को छोड़कर कल्पना लोक में विचरण करने लगी।

छायावाद की परिभाषा — छायावाद अपने युग की अत्यन्त व्यापक प्रवृत्ति रही है। फिर भी परिभाषा के संबंध में विचारकों और समालोचकों में एक मत नहीं हो सका। विभिन्न विद्वानों ने छायावाद की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद को स्पष्ट करते हुए लिखा है —" छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका संबंध काव्य-वस्तु से होता है अर्थात जहाँ कवि ~~उस~~ अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त

8.00 चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार
9.00 से व्यंजना करता है। छायावाद शब्द का
10.00 दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के
व्यापक अर्थ में है।
11.00 महादेवी वर्मा के अनुसार — छायावाद प्रकृति के बीच
12.00 जीवन का उद्-गीथ है।
आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार — "छायावाद
13.00 आधुनिक हिन्दी कविता की वह शैली है जिसमें
सूक्ष्म और काल्पनिक सहानुभूति के लाक्षणिक
एवं प्रतीकात्मक ढंग पर प्रकाशित करते हैं।"
जयशंकर प्रसाद -" जब वेदना के आधार पर
स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी
में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया।
द्वन्द्वात्मकता, लाक्षणिकता, सौंदर्यमय प्रतीक विधान
तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति-
छायावाद की विशेषताएँ हैं।
डॉ० रामकुमार वर्मा —" परमात्मा की छाया आत्मा
में, आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती

है तभी छायावाद की सृष्टि होती है।"

डॉ० नगेन्द्र –" छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। छायावाद विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है।"

मार्क्सवादी समीक्षक डॉ० नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक छायावाद में लिखा है कि छायावाद वस्तुतः कई काव्य-प्रवृत्तियों का सामूहिक नाम है और उस "राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है" जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति पाना चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।

डॉ० देवराज ने छायावाद के संबंध में लिखा है –" छायावाद पौराणिक धार्मिकता के विरुद्ध आधुनिक लौकिक चेतना का विद्रोह है।"

The question isn't who is going to let me; it's who is going to stop me. – Ayn Rand